(1)

Topic → Lecture (4) Sarita Kumari

Subject:- Philosophy.

(2) Meaning of Nastika. (S.)

B.A Part-I (S.)

Ans:- भारतीय दर्शन में निष्काम कर्म के बारे में बतलाया गया है। अपनी भावना को हम किस प्रकार प्रकट स्वयं कारिका हैं से व्यक्त करते हैं। एवं अपना कुछ न कुछ मानी ईश्वर को इस जगत में नहीं रहने के बारे में बतलाया गया है। नास्तिक दर्शन में अपनी समस्या पर विस्तारपूर्वक चर्चा हुई है। इस विषय को अंग आस्तिक दर्शन में ईश्वर को मानते हैं। नास्तिक दर्शन में नहीं मानता है।

यही सब बात को ध्यान में रख कर हम अपने व्यवहार आचार विचार धर्म कर्म सब प्रकार की भेद भावना को अपने बुद्धि द्वारा व्यक्त करना

P.T.O.

Scanned with CamScanner

बतलाया गया है। वहीं सब नास्तिक दर्शन के बारे में बतला गया है।

सब प्रकार की बाधाओं दूर किया गया है। अपनी इच्छाशक्ति को प्रश्रय देते हुए।

इस समस्या का नियम पूर्वक पालन करना करते रहने पर विशेष रूप से अपनी क्रिया पर विस्तार पूर्वक विचार करना चाहिए

इस संसार मे ईश्वर है। ही नही आस्तिक दार्शनिकों के कहना है। इसी बातों को रखना चाहिए।

इस संसार की उत्पति में जड़ जगत यानी हवा पानी प्राकृति ~~यानी~~ देन से मनुष्य के जन्म होता है। और आगे की ओर अग्रसर बढ़ते रहते। है। और अपनी भावनाओं को पूर्ण रूप से व्यक्त ~~नहि~~ करना ही नास्तिक दर्शन कहलाता है।

अपने आपमें जगत ~~के~~

P.T.O.

को पालन करने वाला कोई दूसरा नहीं है।
इस विषय पर विस्तार पूर्वक आलोचना करना चाहिए।

इसी प्रकार इस संसार की उत्पत्ति अपने आपमें हो जाता है। और अपने संचार भी हो जाता है।

जिस प्रकार मनुष्य जन्म लेता है, और आगे वह बढ़ते रहते रहते हैं और बच्चा से वह जवान होता है और जवान से वह बूढ़ा होता है। उसी प्रकार अपने आपमें इस संसार का यही नियम देखने को मिलता सोपेनहावर, निट नितसे, (Sopenhave, Nitese) ने

वर्णानिक ढंग से इस समस्या से निपटने की नियमपूर्वक चलना चाहिए इस संसार अकेला है। इस विषय में यही कहीं सब बातों को विस्तार पूर्वक आलोचनाएँ हुई हैं।

P.T.O.

इस दर्शन में यही सब देखने को मिलती है।

(Meaning of Nastika)

मैं इस संसार में अपने आप से उत्पत्ति होती है होती है इस में दूसरा कोई नहीं सब प्राकृति के देन हैं। और जड़ जगत का मुख्य कारण यही सब बतलाया गया है।

भारतीय दर्शन में यही सब संक्षिप्त हो या विस्तार सब एक नियम के आधिन ही अग्रसारित किया गया है। सब बाधाओं को दूर करके

इस संसार की उत्पत्ति हुई सब बातों पर विशेष रूप से बल दिया जाता है।

E.N.D.